पर्यावरण संरक्षण के लिए पद्मश्री-'वृक्ष मित्र' बाबा सेवा सिंह

पर्यावरण को सुधारने निकला एक संत

❑ राजदेव पाण्डेय

सामान्य तौर पर पर्यावरण सुधार संतों का विषय नहीं माना जाता। कदाचित ग्वालियर किले के गुरुद्वारा दाताबंदी छोड़ के बाबा सेवा सिंह ऐसे विरले संत हैं,जो पूजा-पाठ, सत्संग जैसे आध्यात्मिक कार्यों से परे बिगड़ते पर्यावरण को लेकर चिंतित हैं। यही नहीं उन्होंने लीक से हटकर पर्यावरण को सुधारने व सहेजने महारथी प्रयास शुरू किए। लिहाजा देश की सरकार ने उन्हें पद्मश्री से नवाजने की घोषणा की। इससे परे बहुत कम लोगों को पता होगा कि बाबा सेवा सिंह की प्रेरणा से ही सरहद पर वीरांगनाओं ने दस्तक दी है। बीएसएफ में शामिल हुईं लड़कियाँ बाबा के शैक्षणिक संस्थाओं से संबंधित हैं।

पंजाब के तरनतारन जिले के पेठ बानियां गांव में एक सामान्य परिवार में बाबा सेवा सिंह का जन्म वर्ष 1960 में हुआ। वह दो वर्ष की उम्र में गंभीर बीमारी के शिकार हुए, तब उनकी मां उन्हें लेकर खडूर साहब पहुंची। अरदास की कि अगर उनका बेटा ठीक हो जाएगा तो वह सेवा के लिए अर्पित कर देंगी। नौनिहाल बाबा ठीक हो गए। इसके बाद पांच वर्ष की उम्र में उनकी मां ने उन्हें खडूर साहब पहुंचकर धर्म की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। तब से लेकर आज तक बाबा सेवा सिंह घर नहीं लौटे। बताते हैं कि बाबा सेवा सिंह अपने पिता की मृत्यु पर भी अपने गांव नहीं पहुंचे। केवल एक सेवादार को भेज दिया। हां, उनकी मां आज भी उनसे मिलने आती हैं। उनसे बाबा ने कह रखा है कि अरदास व प्रार्थना के दौरान ही मिलेंगे। वैराग्य और सेवा के इस संत का समूचे समाज

के प्रति ऐसा समर्पण उनके कद को कहीं ऊंचा कर देता है।

भजन-कीर्तन और आम जनमानस की सेवा करना ही उनकी दिनचर्या है। बदलते दौर में बाबा ने पर्यावरण पर घिरे आ रहे संकट को भांपा। फिर क्या था बाबा ने पौध रोपण को अपना मिशन बना लिया। बताते हैं कि मध्यप्रदेश विशेष रूप से ग्वालियर, राजस्थान, पंजाब और दिल्ली में करीब-करीब पाँच सौ किलोमीटर लम्बाई में वह पौध रोपण कर चुके हैं। उनका कार्य पौध रोपण तक ही सीमित नहीं, उन्होंने पौधों के पालन की भी जिम्मेदारी उठाई है। ग्वालियर किला स्थित गुरुद्वारा दाताबंदी पर मौजूद बाबा लक्खा सिंह बताते हैं कि उन्होंने इसके लिए अकेले ग्वालियर में पांच टैंकर तैनात किए हैं। इन पर करीब पच्चीस आदमी तैनात हैं। जिनका इकलौता काम केवल पौधों को सींचना और उनकी रक्षा करना है। बाबा सेवा सिंह ने पौध रोपण का काम वर्ष 1999 से शुरू किया। बदलते पर्यावरण पर चिंतित बाबा सेवा सिंह का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग से निबटने के लिए अगर ठोस उपाय नहीं किए तो हालात मानव समुदाय के लिए विपरीत हो जाएंगे। समूची मानव जाति को आगे आकर इसके लिए प्रयास करना चाहिए।

स्त्री शिक्षा के प्रति बाबा सेवा सिंह ने अप्रितम कार्य किया है। विशेषकर लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उन्होंने पंजाब और दिल्ली में कई संस्थान खोले हैं। इन संस्थाओं में जाति धर्म से परे हर समुदाय की लड़कियों को शिक्षा दी जाती है। उनकी कुछ संस्थाओं में रिटायर्ड सेना अफसर नियुक्त हैं। ये लोग लड़कियों को प्रशिक्षण देते हैं। दिल्ली पुलिस और हाल ही में बीएसएफ में महिला बटालियन में बाबा की प्रेरणा से लड़कियां शामिल हुई हैं। बाबा सेवा सिंह ने बताया कि मैं चाहता हूं बेटियां आगे बढ़कर देश के विकास और सुरक्षा में योगदान दें। फिलहाल बाबा पद्मश्री से विभूषित किए जाने की बात को बड़ी सहजता से ले रहे हैं। उनका कहना है कि सरकार ने संगत और आम आदमी का मान रखा है। मैं तो समाज सेवा का ध्येय बना चुका हूं।

बाबा सेवा सिंह अनथक फकीर की भांति समाज को जोड़ने व उसका दुःख-दर्द दूर करने प्रयासरत हैं। वह कहते हैं कि मानव सेवा हमारा मुख्य कार्य होना चाहिए।

(लेखक नईदुनिया ग्वालियर के पत्रकार हैं।)

❖